ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-4* Issue-12* March- 2020
Anthology : The Research

वाल्मीकि रामायण में शिक्षा का स्वरूप

सारांश

भारत की शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में भारतीय शिक्षा प्रणाली की उत्पत्ति, विकास एवं गुण–दोषों का ज्ञान कराया जाता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि भारत के सभी शिक्षाविद तथा भारत सरकार द्वारा नियुक्त सभी राष्ट्रीय शिक्षा–आयोग यह स्वीकार करते हैं कि भारत के पास कोई ''भारतीय अथवा राष्ट्रीय'' शिक्षा प्रणाली है ही नहीं। सम्प्रति, भारत में विद्यमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों द्वारा बलात आरोपित एक अभारतीय, अराष्ट्रीय एवं विदेशी शिक्षा प्रणाली है। इस अभारतीय, अराष्ट्रीय एवं विदेशी शिक्षा प्रणाली की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसे वैदिक काल से निरन्तर चली आ रही भारतीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को उन्मूलित कर उसी के स्थान पर आरोपित किया गया था। आज हम बड़े–बड़े विद्वानों और नेताओं के मुख से प्रायः यह सुनते हैं कि भारत में कोई भारतीय दिखलाई नहीं पड़ता। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि हम भारतीयों को सचमुच ''भारतीय'' बनाना चाहते हैं तो हमें प्रचलित विदेशी शिक्षा प्रणाली को समूल नष्ट करना होगा और उसके स्थान पर एक भारतीय अथवा राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पुनः स्थापित करनी होगी जिसकी जड़े भारत भूमि में जमी होगी और जिसका आधार भारतीय संस्कृति होगी। विदेशी संस्कृति भारत के भावी नागरिकों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास कदापि नहीं कर सकती है।

संजीव कुमार
विभागाध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा विभाग
आई0आई0एम0टी0,
अलीगढ़, भारत

राम किशन शर्मा
एम0ए0, पी–एच0डी0

शिक्षा के भारतीयकरण का तात्पर्य

प्रसन्नता का विषय है कि आज भारत के सभी शिक्षाविद् और राष्ट्रीय–शिक्षा–आयोग शिक्षा के भारतीयकरण अथवा राष्ट्रीयकरण के पक्ष में हैं। प्रस्तुत अध्ययन की अपेक्षाओं की दृष्टि से शिक्षा के भारतीयकरण अथवा राष्ट्रीयकरण का अभिप्राय हैं कि भारत की सभ्यता और संस्कृति एवं जीवन दर्शन और भारतीयों की आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओं को भारतीय शिक्षा–प्रणाली का आधार बनाना, जिससे वह सचमुच ''भारतीय'' नागरिकों का निर्माण कर सकें।

शिक्षा का भारतीयकरण और वाल्मीकि रामायण

अब प्रश्न उठता है कि स्वतंत्र भारत में भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास किस प्रकार से किया जा सकता है? इस सम्बन्ध में राधाकृष्णनन् आयोग, मुदालियर आयोग और कोठारी आयोग पहले ही अनेक सुझाव दे चुके हैं और यह स्पष्ट कर चुके हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित होगी। भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों का एक मात्र स्त्रोत भारतीय वाड्.मय है, जो ऋगवेद से लेकर रामचरितमानस् तक फैला हुआ है।

भारतीय वाड्.मय में वाल्मीकि रामायण असाधारण महत्व का ग्रन्थ है। यद्यपि इस ग्रन्थ की गणना इतिहास ग्रन्थों के साथ होती है फिर भी शिक्षा की दृष्टि से यह एक अनुपम, अद्वितीय ग्रन्थ है। वाल्मीकि रामायण लौकिक संस्कृत का आदि काव्य है। इस ग्रन्थ में दशरथ के राजकुमारों– राम, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न – की शिक्षा–दीक्षा का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि वाल्मीकि ने राम की शिक्षा–दीक्षा के माध्यम से शिक्षा के जिन आदर्शों एवं सिद्धान्तों का वर्णन किया है वे वाल्मीकि

रामायण के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिल सकते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम तथा अन्य राजकुमारों की शिक्षा–दीक्षा परिवार में माता–पिता एवं दशरथ के कुलगुरू वशिष्ठ के द्वारा संपन्न हुई। परिवार के स्तर पर दी गई शिक्षा के द्वारा चारों राजकुमारों में सद्गुणों का विकास करके उन्हें आदर्श मानव बनाया गया। तत्पश्चात राष्ट्र रक्षक के रूप में राम की शिक्षा वन में महर्षि वाल्मीकि जी के द्वारा संपन्न हुई। जिस समय महर्षि विश्वामित्र जी राम को वन में ले जाने के लिए अयोध्या आए उस समय राम की आयु 15 वर्ष की थी अर्थात अभी वे 16 वर्ष के भी नहीं हुए थे।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वाल्मीकि रामायण में उल्लखित शैक्षिक विचारों का चयन, वर्गीकरण एवं विवेचन करना।
2. भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्निमाण (भारतीयकरण) के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव देना।

प्रस्तुत अध्ययन वाल्मीकि रामायण में वर्णित राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की शिक्षा–दीक्षा तक सीमित है।

अध्ययन की विधि

जे. डब्लयू. बेस्ट ने शोध की विधियों को तीन भागों में विभाजित किया हैः–

1. ऐतिहासिक विधि, 2. वर्णात्मक विधि, और3. प्रयोगात्मक विधि।

बेस्ट के उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन के लिए अपनाई गई विधि ऐतिहासिक शोध विधि है क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अतीत काल के तथ्यों का विश्लेषण करना है।

अध्ययन की प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन की प्रक्रिया के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण पद हैं :

1. वाल्मीकि रामायण में वर्णित राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की शिक्षा–दीक्षा की विशेषताओं का चयन करना,
2. चयनित विशेषताओं का वर्गीकरण करना,
3. चयनित विशेषताओं की व्याख्या करना एवं निष्कर्षों का निरूपण करना।

निष्कर्ष

1. वैदिक काल में शिक्षा और संस्कार परस्पर इतने एकताबद्ध थे कि उन्हें अलग–अलग किया जाना संभव न था। संस्कार शिक्षा के आधार थे और शिक्षा संस्कारों का आधार थी। विद्यार्थियों का संस्कारण करके उन्हें आदर्श मानव बनाना शिक्षा का प्रमुख कार्य था। वेदों में संस्कारों के महत्व का प्रतिपादन किया गया हैं। संस्कार असंख्य हैं, किन्तु वर्तमान काल में 16 संस्कार महत्वपूर्ण माने जाते हैं। प्राचीन काल में ये संस्कार कुल गुरूओं द्वारा संपन्न कराए जाते थे।
2. राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के शिक्षा–दीक्षा संबन्धी तथ्यों को पढ़कर जाति प्रथा के अभिशाप से अभिशप्त आधुनिक विचारक यह कह सकते हैं कि वाल्मीकि रामायण में केवल क्षत्रिय राजकुमारों की शिक्षा–दीक्षा का वर्णन किया गया है। वास्तविकता तो यह है कि दशरथ के राजकुमारों की शिक्षा–दीक्षा के माध्यम से संपूर्ण समाज के बच्चों की शिक्षा–दीक्षा का वर्णन किया गया है। इसके दो कारण है :– (1) वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था बड़ी लचीली थी और वह वंश जन्म पर आधारित न होकर गुण–कर्म पर आधारित थी। (2) किसी भी विद्यार्थी के वर्ण का निर्णय 24 वर्ष की अवस्था में गुरूकुलों में आचार्यों द्वारा होता था। वर्ण जातियाँ नहीं हैं तथा जातियाँ वर्ण नहीं हैं। वर्ण और जाति में मौलिक अंतर हैं।
3. वैदिक कालीन शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह विद्या (सैद्धान्तिक शिक्षा) और कला (व्यावहारिक शिक्षा), इन दो भागों में स्पष्ट रूप से विभक्त थी। विद्याएँ शिक्षा के ज्ञानोद्देश्य से संबधित होती थी और कलाएँ शिक्षा के व्यावहारिक अथवा व्यावसायिक उद्देश्य की प्राप्ति का साधन होती थी। वैदिक काल में ज्ञान की प्राप्ति और व्यावसायिक दक्षता, ये दोनों शिक्षा के सर्वोपरि उद्देश्य माने जाते थे।
4. शिक्षण विधियों की दृष्टि से वैदिक शिक्षा का सर्वोपरि योगदान यह है कि विद्यार्जन के लिए स्वाध्याय और कालार्जन के लिए नियमित अभ्यास पर विशेष बल दिया जाता था।
5. वाल्मीकि रामायण में बला और अतिबला विद्याओं को बड़ा महत्व प्रदान किया गया हैं। इन विद्याओं को ब्रह्मा की पुत्रियों और मन्त्रों का समुदाय कहा गया है। इन विद्याओं की विशेषता यह थी कि ये अपने धारणकर्ता को परम तेजस्वी, परम पराक्रमी, पूर्णतः अविजेय तथा परम विद्वान बना देती थी। आज कल इन विद्याओं का लोप हो गया है। अतः इनकी खोज करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है।
6. वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि महर्षि विश्वामित्र ने श्रीराम को बला तथा अतिबला विद्याएं और दिव्यास्त्र देकर

आतातायियों का वध करके राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए तैयार किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि विश्वामित्र के जीवन काल में भारतवर्ष राक्षसों द्वारा लाए गए संकट से बुरी तरह त्रस्त था किन्तु हमारा विश्वास है कि महर्षि वाल्मीकि के जीवन काल में भारत का संकट इतना गंभीर नहीं था जितना गंभीर संकट भारत के बाह्य और आंतरिक शत्रुओं द्वारा आज उत्पन्न कर दिया गया है। अतः भारतवर्ष के अस्तित्व एवं सुरक्षा की दृष्टि से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं राष्ट्रीय चरित्र का विकास किया जाना शिक्षा का सर्वोपरि उद्देश्य होना चाहिए। आज जातिवाद और धर्मनिरपेक्षता, शिक्षा के इस राष्ट्रीय उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधाएं हैं।

सुझाव

1. वर्तमान काल में शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों मे विभक्त किया जाता है :– (1) अंतिम, मुख्य या सर्वोपरि उद्देश्य (2) गौण उद्देश्य। कहने की आवश्यकता नहीं कि वैदिक ऋषियों ने इस सत्य का साक्षात्कार कर लिया था कि मानव निर्माण शिक्षा का एक मात्र सर्वोपरि उद्देश्य है और शिक्षा इस उद्देश्य की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है। मानव की व्याख्या करना कठिन है, किन्तु वर्तमान काल में एक सर्वमान्य सिद्धान्त यह है कि अपने राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के लिए समर्पित मानव ही मानव है। इस दृष्टि से हमारी शिक्षा का प्रधान उद्देश्य भारतीय धर्म एवं संस्कृति पर आधारित ''राष्ट्रीय दृष्टिकोण'' होना चाहिए और ज्ञान तथा सदाचार आदि गौण उद्देश्यों के माध्यम से राष्ट्रीय दृष्टिकोण का ही विकास किया जाना चाहिए।
2. शिक्षा संस्कार क्षम होनी चाहिए। जब तक शिक्षा के द्वारा भावी पीढ़ी को संस्कारित नहीं किया जाएगा, तब तक वह पशुओं के समान ही बना रहेगा।
3. प्रत्येक बालक को शिक्षा वर्ण धर्म के आधार पर होनी चाहिए अर्थात पहले यह ज्ञात किया जाना चाहिए कि बालक स्वाभाविक, जन्मजात गुण और कर्म क्या है? तत्पश्चात उन्हीं गुण कर्म के आधार पर उसकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। बालक के स्वभाव निर्धारण तथा उसकी शिक्षा योजना का यह शाश्वत मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त हैं।
4. शिक्षा का पाठ्यक्रम विद्या (सैद्धान्तिक अथवा ज्ञानात्मक शिक्षा) और कला (व्यावहारिक अथवा व्यावसायिक शिक्षा) में स्पष्ट रूप से विभक्त होना चाहिए। मनुष्य को ज्ञानवान भी होना चाहिए और अपने बाहुबल से किसी शिल्प अथवा व्यवसाय के द्वारा अपना जीविकोपार्जन करने में भी सक्षम होना चाहिए।
5. वर्तमान काल में हमारी शिक्षा संस्थाओं में व्याख्यान विधि का बोलबाला है। जबकि भारतीय सिद्धांत तो यह है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों का केवल मार्ग दर्शन ही कर सकता है शिक्षा तो विद्यार्थियों को अपने प्रयास से स्वयं ही प्राप्त करनी चाहिए। इस दृष्टि से शिक्षा में दो विधियों को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाना चाहिए :– (1) ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाध्याय विधि (2) कलात्मक दक्षता की प्राप्ति के लिए अभ्यास विधि।
6. वैदिक कालीन बला और अतिबला विद्याएँ मन्त्रों का समुदाय है। इन विद्याओं के नाम से ही स्पष्ट है कि ये विद्याएँ मनुष्य को सब प्रकार के बल और अतिबल प्रदान करती है। भारतीय शोधकर्ताओं को इन मंत्रों का अनुसंधान करना चाहिए और उनको सिद्ध करके इन बलों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।
7. राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का सर्वोपरि उद्देश्य भावी पीढी को राष्ट्र के आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं का सर्वनाश करने में सक्षम बनाना होना चाहिए। इसके लिए राष्ट्र के प्रत्येक बालक और बालिका के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। हमें अपनी एन0सी0सी0 (राष्ट्रीय कैडिट कोर) का पुर्नगठन इसी दृष्टि से करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महर्षि वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2057.
2. परमहंस जगदीश्वरानंद सरस्वती, श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण, गोविन्दराम हासानंद, नई सड़क, देहली 1983.
3. मुनि लाल, अध्यात्मरामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2039.
4. फादर कामिल बुल्के, रामकथा : उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, 1999.
5. रघुनाथ प्रसाद वर्मा, श्री रामचरित गाथा, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् 2039.
6. श्री अरविंद, भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविंद आश्रम, पाण्डिचेरी, 1988.
7. बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन–सार, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1962.

8. श्री मोहन लाल महतो 'वियोगी', आर्यजीवनदर्शन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1971.
9. बेस्ट. जे. डब्लयू. रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिटिंग हॉल, नई दिल्ली.
10. Dr. S. C. Sarkar, Educational Idea's and Instituion's in Ancient India, Janaki Prakashan, Patna, 1979.
11. R. C. Majumdar, The Vedic Age, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, 1988.